

मारवाड़ का इतिहास

- जोधपुर + बाड़मेर + नागौर + जालौर + पाली का क्षेत्र

राठौड़ों की उत्पत्ति

- मुहणोत नैणसी + जोधपुर राज्य की ख्यात + पृथ्वीराज रासो के अनुसार **जयचंद गहड़वाल** के पौत्र **राव सीहा** ने 1240 ई. में कन्नौज से आकर **राठौड़ वंश** की स्थापना की।
- पंडित **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** के अनुसार बदायूँ से आकर राव सीहा ने राठौड़ वंश की स्थापना की।
- राठौड़ स्वयं को **सूर्यवंशी** मानते हैं।
- राठौड़ शब्द **संस्कृत के राष्ट्रकूट** से बना है, जो दक्षिण भारत की एक जाति थी।
- कर्नल **जेम्स टॉड** ने कहा कि मुगल बादशाह अपनी विजयों में से आधी के लिए राठौड़ों की **लाख तलवारों** के अहसानमंद थे।
- राठौड़ों की कुल देवी - **नागणेची माता**
- आराध्य देवी / इष्ट देवी - **चामुण्डा माता (मेहरानगढ़ दुर्ग)**

राव सीहा

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का **संस्थापक / आदिपुरुष**।
- पाली के **पालीवाल ब्राह्मणों** की रक्षा के लिए मारवाड़ आये क्योंकि मेर पालीवालों से लूटपाट करते थे।
- राव सीहा + पालीवाल ब्राह्मण व मुस्लिम आक्रमणकारियों के बीच लड़े गये युद्ध में **1 लाख लोग** मारे गए, इस युद्ध को **लाख झंवर** कहा जाता है।
- राव सीहा का स्मारक - **बीठू (पाली)**

राव आस्थान

- राव सीहा के पुत्र।
- खेड़ (बालोतरा)** पर अधिकार कर **रणछोड़राय मंदिर** का निर्माण कराया।
- जलालुद्दीन खिलजी की सेना से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राव धूड़

- कर्नाटक से अपनी कुलदेवी **चक्रेश्वरी (नागणेची माता)** की मूर्ति लाकर **रणगण गाँव (बालोतरा)** में स्थापित करवाई।

मल्लीनाथ जी

- बाड़मेर के **मालाणी** क्षेत्र का नाम इन्हीं के नाम पर पड़ा।
- राजस्थान के लोक देवता हैं, जिनका मंदिर **तिलवाड़ा (बालोतरा)** में है।

राव चूड़ा

- वीरमदेव के पुत्र थे।
- प्रतिहार वंश की **इंदा शाखा** ने अपनी राजकुमारी की शादी राव चूड़ा के साथ कर दी तथा **मंडोर** दहेज में दे दिया।
- राव चूड़ा ने अपनी राजधानी **मंडोर (जोधपुर)** को बनाया।

नोट – मंडोर का प्राचीन नाम – माण्डव्यपुर

- मारवाड़ के राठौड़ वंश का वास्तविक संस्थापक।
- मारवाड़ में **सामन्तशाही / नौकरशाही** की शुरुआत की।
- राव चूड़ा ने अपनी रानी **किशोर कँवरी** के प्रभाव में छोटे बेटे **राव कान्हा** को राजा बना दिया।

बड़े पुत्र **राव रणमल** ने अपनी बहन **हंसाबाई** का विवाह राणा लाखा के साथ इस शर्त पर किया कि इनसे उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का शासक बनेगा। राव रणमल मेवाड़ में रहकर राणा मोकल के संरक्षक बने, लेकिन रणमल ने राणा मोकल के भाई **राघवदेव** की हत्या करवा दी। तब महाराणा कुम्भा ने रणमल की प्रेमिका **भारमली** की सहायता से रणमल की हत्या करवा दी।

राव जोधा (1438-1489 ई.)

- **1438** में जब चित्तौड़ में इनके पिता रणमल की हत्या हुई तब जोधा मेवाड़ से अपने साथियों के साथ मारवाड़ की तरफ भागा।
- **हड़बूजी** के आशीर्वाद से राव जोधा ने **अहड़ाजी सिंधलों** को पराजित कर **मंडोर दुर्ग** पर अधिकार कर लिया।

आवल बावल की संधि - 1453 ई.

- हंसाबाई की मध्यस्थता से मेवाड़ (महाराणा कुम्भा) व मारवाड़ (राव जोधा) की सीमा का निर्धारण **सोजत (पाली)** में किया गया।
- राव जोधा ने अपनी पुत्री **शृंगार देवी** का विवाह महाराणा कुम्भा के पुत्र **रायमल** से कर दिया।
- राव जोधा ने **13 मई 1454** को **मेहरानगढ़ दुर्ग** (जीव करणी माता ने रखी) बनाकर **जोधपुर शहर** बसाया।
- राव जोधा के दूसरे पुत्र **राव बीका** ने **बीकानेर** बसाया।
- राव जोधा के पुत्र **राव दूदा** ने **मेड़ता** बसाया तथा राव जोधा के पुत्र **करमसिंहजी** के वंशज **करमसोता राठौड़** कहलाये।
- राव जोधा की रानी **जसमादे** ने जोधपुर में **रणीसर तालाब** का निर्माण कराया तथा अपनी माता **कोड़मदे** के नाम पर जोधा ने **कोड़मदेसर तालाब** बनवाया।
- राव जोधा ने दिल्ली शासक **बहलोल लोदी** को हराया।
- पंडित **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** के अनुसार राव जोधा मारवाड़ का प्रथम प्रतापी राजा था।

राव सातलदेव

- अजमेर के सूबेदार **मल्लू खाँ** के सेनापति **घुड़ले खाँ** ने मारवाड़ में गणगौर की पूजा कर रही **140 कन्याओं** का अपहरण कर लिया।
- राव सातलदेव ने घुड़ले खाँ का सिर काटकर तीरों से छिद्रित कर कन्याओं को दे दिया।

राव गांगा राठौड़

- **खानवा के युद्ध (1527 ई.)** में गांगा ने अपने पुत्र **मालदेव** के नेतृत्व में **4000** की सेना भेजकर राणा सांगा की मदद की।
- जोधपुर में **गांगाणाल तालाब**, **गांगा की बावड़ी** बनवाई।
- राव मालदेव (मारवाड़ का पितृहंता) ने इनकी हत्या कर दी।

राव मालदेव (1532-1562 ई.)

- **पिता** - गांगा राठौड़
- **माता** - पद्मा (सिरोही के जगमाल देवड़ा की पुत्री)
- **राज्याभिषेक** - सोजत (पाली)

उपनाम

- 52 युद्ध, 58 परगनों का विजेता।
- फारसी इतिहासकार **अबुल फजल, निजामुद्दीन, बदायूनी** ने **हशमत वाला शासक** कहा है।
- **फरिश्ता** ने हिंदुस्तान का सबसे शक्तिशाली शासक कहा।
- **बदायूनी** ने भारत का महान पुरुषार्थी राजकुमार कहा।
- राव मालदेव ने **मालकोट दुर्ग, मेड़ता, पोकरण दुर्ग, रीया दुर्ग (नागौर)** का निर्माण कराया।

हीरावाड़ी (नागौर) का युद्ध - 1533 ई.

- नागौर के शासक **दौलत खाँ** ने मेड़ता पर अधिकार करने का प्रयास किया तो मालदेव ने दौलत खाँ को हराकर नागौर पर अधिकार किया।

पाहेबा / साहेबा का युद्ध - 1541 ई.

- राव मालदेव व **राव जैतसी (बीकानेर)** के मध्य हुआ।
- राव जैतसी मारा गया। राव जैतसी का पुत्र **कल्याणमल** शेरशाह सूरी के दरबार में सहायता के लिए चला गया।
- मालदेव ने बीकानेर का सामंत **कूम्पा** को बना दिया।

वीरमदेव पर आक्रमण

- मालदेव व वीरमदेव के मध्य **दरियाजोश हाथी** को लेकर विवाद था। मालदेव ने मेड़ता पर अधिकार कर लिया।
- मेड़ता के वीरमदेव भी शेरशाह सूरी के पास चले गये।

राव मालदेव - हुमायूँ

- मालदेव शेरशाह सूरी के खिलाफ हुमायूँ की मदद करना चाहता था, लेकिन हुमायूँ ने मालदेव पर भरोसा नहीं किया।

गिरी सुमेल युद्ध (जैतारण युद्ध - पाली)

- 5 जनवरी 1544 को राव मालदेव + जेता-कूँपा (मालदेव के सेनापति) V/S शेरशाह सूरी + कल्याणमल (बीकानेर) + वीरमदेव (मेड़ता) के मध्य हुआ, लेकिन शेरशाह सूरी की कूटनीति के कारण राव मालदेव वापस जोधपुर चला गया।
- युद्ध में जेता व कूँपा ने मिलकर शेरशाह सूरी की सेना का सामना किया और वीरगति को प्राप्त हुए।
- शेरशाह सूरी युद्ध हारने वाला था, लेकिन उसका सेनापति जलाल खाँ जलवानी कुछ सेना लेकर आ गया और शेरशाह सूरी युद्ध जीत गया।
- युद्ध जीतने के बाद शेरशाह सूरी ने कहा, "मुट्टी भर बाजरे के लिए मैं हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता।"
- इस युद्ध का वर्णन अब्बास खाँ सरवानी ने अपनी पुस्तक "तारीख-ए-शेरशाही" में किया है।

नोट - "तारीख-ए-फिरोजशाही" के लेखक - जियाउद्दीन बरनी हैं।

- शेरशाह सूरी ने जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर दुर्ग में शेरशाही मस्जिद का निर्माण करवाया व दुर्ग का किलेदार खास खाँ को बनाया।
- मालदेव सिवाणा (मारवाड़ शासकों की शरणस्थली) चले गये।
- शेरशाह सूरी ने वीरमदेव को मेड़ता व कल्याणमल को बीकानेर दुर्ग सौंप दिया।
- 1545 में कालिंजर दुर्ग अभियान में शेरशाह सूरी की मृत्यु के बाद मालदेव ने पुनः जोधपुर दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

हरमाड़ का युद्ध - 1557 ई.

- राव मालदेव + अजमेर के सूबेदार हाजी खाँ V/S महाराणा उदयसिंह के मध्य हुआ, जिसमें राव मालदेव की विजय हुई।

रूठी रानी

- राव मालदेव की शादी जैसलमेर शासक लूणकरण भाटी की पुत्री उमादे के साथ हुई थी।
- शादी के दिन उमादे मालदेव से नाराज होकर अजमेर के तारागढ़ दुर्ग में चली गई व इतिहास में रूठी रानी के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- राव मालदेव की अन्य रानी झाली रानी स्वरूपदे ने मंडोर के पास "बहुओं रो तालाब" का निर्माण करवाया था।

दरबारी विद्वान - ग्रंथ

- आशानंद जी - बाघा भारमली रा दुहा
- ईसरदास जी - हाला झाला री कुंडलिया (सूर सतसई)

राव चंद्रसेन (1562-1581 ई.)

- जन्म - 16 जुलाई 1541 ई.
- राव मालदेव का बड़ा पुत्र राम था, दूसरा पुत्र उदयसिंह व तीसरा पुत्र राव चंद्रसेन था।
- झाली रानी स्वरूपदे ने अपने पुत्र राव चंद्रसेन को शासक बनवा दिया।

उपनाम

- मारवाड़ का प्रताप (विश्वेश्वर नाथ रेऊ ने कहा)
- प्रताप का अग्रगामी / प्रताप का पथ-प्रदर्शक
- भूला बिसरा राजा

लोहावट का युद्ध - 1563

- राव चंद्रसेन व इनके भाई उदयसिंह के बीच हुआ।
- राव चंद्रसेन विजयी रहे।
- 1564 में बड़ा भाई राम अकबर के दरबार में जाकर राव चंद्रसेन के विरुद्ध सहायता मांगता है। तब अकबर ने अजमेर के सूबेदार हुसैन कुली खाँ को मेहरानगढ़ दुर्ग पर अधिकार करने के लिए भेजा, जिसने दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- राव चंद्रसेन भाद्राजून (जालौर) चला गया।

नागौर दरबार - 1570 ई.

- 1570 ई. में अकबर ने नागौर में नागौर दरबार लगाया।
- अकाल राहत कार्य के लिए अकबर ने नागौर में शुक्र तालाब का निर्माण करवाया।
- बीकानेर के कल्याणमल, जैसलमेर के हरराज भाटी नागौर दरबार में जाकर अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं।
- राव चंद्रसेन नागौर दरबार में गये थे लेकिन वापस आ गये।

नोट - राव चंद्रसेन ने भाद्राजून में रहकर मुगलों से संघर्ष के लिए अपनी सेना को संगठित किया।

- 1572 में अकबर ने बीकानेर शासक **रायसिंह** को मेहरानगढ़ दुर्ग का किलेदार बनाया।
- 1574 में रायसिंह ने **सिवाणा दुर्ग** पर आक्रमण किया।
- राव चंद्रसेन **सारण की पहाड़ियों (पाली)** में **सचियाय** नामक स्थान पर चले गये, जहाँ 1581 में इनकी मृत्यु हो गई।
- राव चंद्रसेन का स्मारक - **सचियाय (पाली)**।

धन की कमी के कारण राव चंद्रसेन ने महाजन वर्ग से लूट की थी, इसलिए राव चंद्रसेन आम जनता में अलोकप्रिय हो गये। अकबर ने चंद्रसेन की मृत्यु के बाद मारवाड़ को 1581-1583 तक खालसा (मुगलों के अधीन) घोषित कर दिया।

मोटा राजा उदयसिंह (1583-1595)

- उपाधि - मोटा राजा (अकबर ने दी)
- मारवाड़ का प्रथम शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की और अपनी बेटी जगत गोसाईं (जोधा बाई) की शादी सलीम (जहाँगीर) से कर दी। इनसे **खुर्रम (शाहजहाँ)** का जन्म हुआ।
- 1589 में अकबर ने सिवाणा पर आक्रमण करने के लिए मोटा राजा उदयसिंह को भेजा। उस समय कल्ला रायमलोत के समय सिवाणा में दूसरा साका हुआ।
- कल्ला रायमलोत की हाड़ी रानी **ज्ञान कँवर** ने जौहर किया तथा कल्ला रायमलोत ने **केसरिया** किया।
- कल्ला रायमलोत ने पृथ्वीराज राठौड़ से अपने **मरसिये** लिखवाये।

सवाई सूरसिंह

- उपाधि - सवाई (अकबर ने दी)
- मारवाड़ के एकमात्र शासक जिन्हें **सवाई** की उपाधि मिली।
- अकबर व जहाँगीर की सेवा की।

महाराजा गजसिंह

- उपाधि - दलथम्भन (फौज रोकने वाला) जहाँगीर ने दी।
- गजसिंह ने अपनी प्रेमिका **अनारा बेगम** के कहने पर छोटे बेटे **जसवंत सिंह** को मारवाड़ का शासक बना दिया तथा बड़े बेटे **अमरसिंह** को नागौर का शासक बना दिया।

राव अमरसिंह राठौड़

- अमरसिंह राठौड़ ने शाहजहाँ के **मीर बख्शी सलावत खाँ** की कटार से हत्या कर दी थी।

मतीरे की राइ - 1644 ई.

- बीकानेर का **सिलवा गाँव** व नागौर का **जाखणिया गाँव** में मतीरे की बेल को लेकर विवाद हुआ।
- बीकानेर के **कर्णसिंह** व नागौर के **अमरसिंह राठौड़** के मध्य युद्ध हुआ, जिसमें **बीकानेर की विजय** हुई।
- अमरसिंह राठौड़ को **बहादुरी, आत्मसम्मान और बलिदान** के प्रतीक के रूप में याद किया जाता है।

महाराजा जसवंत सिंह प्रथम (1638-1678 ई.)

- **राज्याभिषेक** - आगरा दुर्ग में शाहजहाँ ने किया तथा **4000 जात-सवार** का मनसबदार बनाया।
- कंधार अभियान के बाद शाहजहाँ ने मनसबदारी की संख्या **6000** कर दी।
- संरक्षक / प्रधानमंत्री - **राजसिंह कूँपावत**।
- **धरमत के युद्ध** में महाराजा जसवंत सिंह ने **दारा शिकोह** का साथ दिया। युद्ध हारने के बाद जसवंत सिंह जोधपुर गये, तो **हाड़ी रानी जसवंतदे** ने दुर्ग के दरवाजे बंद कर दिए।
- **सामूगढ़ युद्ध** के बाद औरंगजेब के मुगल बादशाह बनते ही महाराजा जसवंत सिंह ने **औरंगजेब की अधीनता स्वीकार** की।
- **खजुआ (उत्तरप्रदेश) का युद्ध 1659 ई.** में औरंगजेब व शाहशुजा के मध्य लड़ा गया, जिसमें औरंगजेब की जीत हुई। इस युद्ध में **औरंगजेब का सेनापति जसवंत सिंह प्रथम** था।
- औरंगजेब ने जसवंत सिंह को शिवाजी के विरुद्ध दक्षिण भारत भेजा, फिर इन्हें काबुल भेज दिया, जहाँ **जमरुद (काबुल - अफगानिस्तान)** में इनकी मृत्यु हो गई।
- महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा, "**आज कुफ्र (धर्म विरोधी) का दरवाजा टूट गया है।**"

पुस्तकें

- भाषा भूषण
- आनंद विलास
- चन्द्रप्रबोध नाटक
- सिद्धांत सार

- सिद्धांत बोध
- अनुभव प्रकाश
- अपरोक्ष सिद्धांत

अन्य दरबारी विद्वान

- दलपति मिश्र
- नरहरी दास
- नवीन कवि
- बनारसीदास

स्थापत्य

- जसवंत सिंह प्रथम ने काबुल से **अनार** के पौधे लाकर जोधपुर के **कागा के बाग** में लगाये।
- इनकी रानी **अतिरंगेदे** ने जोधपुर में **जान सागर तालाब** बनवाया, जिसे **शेखावत जी रो तालाब** कहते हैं।
- दूसरी रानी **जसवंतदे** ने जोधपुर में **राई का बाग** तथा **कल्याण सागर तालाब** बनवाया।

वीर दुर्गादास राठौड़

- **जन्म** - सालवा (जोधपुर)
- **पिता** - आसकरण

उपनाम

- कर्नल जेम्स टॉड ने **राठौड़ों का यूलिसिस** कहा।
- मारवाड़ का उद्धारक।
- मारवाड़ का **उपणीदिया मोती** कहा।
- **छतरी** - शिप्रा नदी किनारे (उज्जैन - मध्य प्रदेश)
- दुर्गादास राठौड़ ने **अजीत सिंह** को शासक बनाने के लिए **30 वर्ष तक (1678-1708 ई.)** संघर्ष किया।
- औरंगजेब के पुत्र **अकबर द्वितीय** ने **नाडोल** में स्वयं को भारत का शासक घोषित कर दिया।
दुर्गादास राठौड़ ने अकबर द्वितीय को मराठा सरदार **शम्भाजी** के दरबार में पहुँचाया।

महाराजा अजीत सिंह

- महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के समय कोई उत्तराधिकारी नहीं था। इसलिए औरंगजेब ने मारवाड़ को **खालसा** घोषित कर दिया। बाद में जसवंत सिंह की गर्भवती रानी **जादम** ने **अजीत सिंह** को जन्म दिया, किंतु औरंगजेब अजीत सिंह को शासक नहीं बनाना चाहता था।
- **मुकुंददास खींची**, **गौरा धाय** के साथ मिलकर **दुर्गादास राठौड़** ने अजीत सिंह को औरंगजेब के चंगुल से निकालकर सिरोही के **कालंद्री मंदिर** में छुपाया था।
- इस कार्य में मेवाड़ **महाराणा राजसिंह** ने बहुत सहायता की। अजीतसिंह व दुर्गादास राठौड़ को शरण देकर **केलवा** की जागीर दी व **रामपुरा** का हाकिम नियुक्त किया।
- **गौराधाय** (मारवाड़ की पन्नाधाय) के बलिदान के कारण इनका नाम मारवाड़ के राष्ट्रभक्त वृक्षों में शामिल किया गया।
- औरंगजेब ने अजीत सिंह की जगह एक और बालक रखा, जिसका नाम **मोहम्मदी राज** रख दिया।
- **देवारी समझौते** के तहत अजीत सिंह ने शासक बनने के बाद **दुर्गादास राठौड़** को अपने राज्य से निकाल दिया।
- पंडित **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** ने अजीत सिंह को **कान का कच्चा** कहा।
- अजीत सिंह ने अपनी पुत्री **इंद्रकंवरी** का विवाह मुगल बादशाह **फर्रुखसियर** के साथ किया था। **इंद्रकंवरी** मुगलों से शादी करने वाली राजपूताने की **अंतिम राजकुमारी** थी।
- **इंद्रकंवरी फर्रुखसियर** की हत्या के बाद वापस जोधपुर आ गई। बाद में अजीत सिंह ने इनका विवाह हिंदू युवक के साथ किया।

पुस्तकें

- गुण सागर
- दुर्गापाठ भाषा
- निर्वाण दुहा
- अजीत चरित्र
- गज उद्धार (भागवत कथा पर आधारित)
- अजीत सिंह के बड़े बेटे **अभयसिंह** के कहने पर छोटे पुत्र **बख्तसिंह** ने अजीत सिंह की हत्या कर दी थी।
- अजीत सिंह की मृत्यु पर इनके साथ **मोर बंदर** जलकर मर गये थे।

महाराजा अभयसिंह

- इनके दरबारी कवि **करणीदान** ने **सूरज प्रकाश** ग्रंथ की रचना की, **वीरभाण** ने **राजरूपक** ग्रंथ की, **जगजीवन भट्ट** ने **अभयोदय** ग्रंथ की रचना की।
- **राजरूपक** ग्रंथ में 1787 में गुजरात सूबेदार **शेर बुलंद खाँ** व अभयसिंह की लड़ाई का वर्णन है, जिसमें अभयसिंह विजयी रहे।

खेजड़ली घटना - 12 सितम्बर 1730 ई.

- **खेजड़ली गाँव (जोधपुर)** में **भाद्रपद शुक्ल दशमी** को महाराजा अभयसिंह ने अपने हाकिम **गिरधारीदास भंडारी** को **खेजड़ी** काटने का आदेश दिया।
- खेजड़ी पेड़ों को बचाने के लिए **अमृता देवी विश्वाई** (रामो विश्वाई की पत्नी) ने अपनी **3 पुत्रियों** सहित **363** लोगों ने पेड़ों से चिपककर जान दे दी।

महाराजा विजयसिंह

- मुगल बादशाह **शाहआलम द्वितीय** से अनुमति प्राप्त कर मारवाड़ में **टकसाल** खोलकर **विजयशाही सिक्के** चलाये।
- इन पर इनकी पासवान **गुलाबराय** का अत्यधिक प्रभाव था।
- **वीर विनोद** में **श्यामलदास** ने विजयसिंह को **जहाँगीर का नमूना** व गुलाबराय को **मारवाड़ की नूरजहाँ** कहा।

भीमसिंह

- **कृष्णा कुमारी** की प्रथम सगाई इन्हीं के साथ हुई।

महाराजा मानसिंह (1803-1843 ई.)

- भीमसिंह के बाद इनका भाई **मानसिंह** शासक बना।
- **नाथ सम्प्रदाय** के **आयस देवनाथ** ने मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की थी। शासक बनते ही मानसिंह ने आयस देवनाथ को अपना गुरु बनाया और जोधपुर में नाथ सम्प्रदाय के **महामंदिर** का निर्माण करवाया।
- मानसिंह नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी थे, इसलिए इन्हें **सन्यासी राजा** भी कहा जाता है।
- **मेहरानगढ़ दुर्ग** में **मानप्रकाश पुस्तकालय** की स्थापना की।
- 1818 में **ईस्ट इंडिया कंपनी** से संधि की।

- दरबारी विद्वान **बांकीदास** थे, जिन्होंने **बांकीदास री ख्यात** लिखी तथा **आयो अंग्रेज मुल्क रे ऊपर** (गीत) लिखा।

महाराजा तख्त सिंह

- **1857** की क्रांति के समय शासक।
- इनके राज्याभिषेक समारोह में **जॉन लुडलो** भी आये थे।
- इन्होंने **कन्या वध** को रोकने के लिए कठोर आदेश निकाले और इन आदेशों को पत्थरों पर खुदवाकर मारवाड़ के सभी किलों पर लगवा दिए।
- **अजमेर मेयो कॉलेज** की स्थापना के समय **1 लाख रुपये** दिये थे।

महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय

- **प्रधानमंत्री - सर प्रतापसिंह** (महारानी विक्टोरिया के स्वर्ण जयंती उत्सव में भाग लेने के लिए **1887** में इंग्लैंड गये थे।)
- इनके समय **1883** में **महर्षि दयानंद सरस्वती** जी जोधपुर आये थे, जहाँ **राईका बाग पैलेस** में उपदेश दिये। तब जसवंत सिंह की प्रेमिका **नन्ही जान** ने महर्षि दयानंद सरस्वती को जहर दे दिया था। **30 अक्टूबर 1883** को अजमेर में सरस्वती जी की मृत्यु हो गई।
- इनके समय जोधपुर में **आर्य समाज** की स्थापना हुई।
- दरबारी कवि **मुरारीदान** ने **यशवंत यशोभूषण** ग्रंथ लिखा।

महाराजा सरदार सिंह

- अपने पिता **जसवंतसिंह** की याद में जोधपुर में **जसवंत थड़ा** का निर्माण करवाया, जिसे **राजस्थान का ताजमहल** कहते हैं।
- **बॉक्सर युद्ध** में मारवाड़ की सेना को चीन भेजा और मारवाड़ के झंडे पर **"चीन 1900"** लिखने का सम्मान मिला।
- इनके पोलो खेलने के शौक के कारण जोधपुर को **पोलो का घर** कहा जाता है।

महाराजा सुमेरसिंह

- **प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)** में सेना लेकर फ्रांस गये।

महाराजा उम्मेदसिंह

- उम्मेद भवन पैलेस / छीतर पैलेस का निर्माण करवाया।
- जवाई बाँध का निर्माण करवाया।

महाराजा हनुवंतसिंह

- मारवाड़ के अंतिम शासक।

नोट – जोधपुर और जैसलमेर के शासकों के मध्य **पोकरण** के अधिकार को लेकर विवाद था, जिसका निपटारा **शाहजहाँ** के काल में किया गया।

किशनगढ़ के राठौड़

महाराजा किशनसिंह

- मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र **किशनसिंह** ने 1609 ई. में **किशनगढ़** की स्थापना की।
- **महाराजा** की उपाधि जहाँगीर ने दी।
- जोधपुर महाराजा **सूरसिंह** के साथ संघर्ष करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

महाराजा रूपसिंह

- **सामूगढ़** के युद्ध में दाराशिकोह की ओर से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- **रूपनगढ़ दुर्ग (किशनगढ़)** बनवाया।

महाराजा मानसिंह

- इनकी बहन **चारुमति** से औरंगजेब का विवाह तय था, लेकिन मेवाड़ महाराणा **राजसिंह** ने चारुमति से विवाह किया।

महाराजा सावंत सिंह (1748-1764 ई.)

- राजपाट त्याग कर **वृन्दावन** चले गये और अपना नाम **नागरीदास** रख लिया तथा **वल्लभ सम्प्रदाय** के अनुयायी बन गये।

- इनकी प्रेयसी **बणी ठणी** (मूल नाम - **विष्णुप्रिया**) का प्रसिद्ध चित्र **मोरध्वज निहालचंद** ने बनाया।
- सावंतसिंह ने **मनोरथ मंजरी**, **रसिक स्नावली**, **दोहा दशा** ग्रंथों की रचना की।

बीकानेर का इतिहास

- **शासन** - राठौड़ वंश
- **कुलदेवी** - करणी माता
- **प्राचीन नाम** - महाभारत काल में **जांगल देश** (बीकानेर, नागौर, फलोंदी) कहते थे जिसकी राजधानी **आहिछत्रपुर** (वर्तमान - नागौर) थी।

राव बीका (1465-1504 ई.)

- राव जोधा के दूसरे पुत्र **राव बीका** ने अपने पिता के तानों से परेशान होकर **1465 ई.** में अपने चाचा **कांधल** व **बीदा** के साथ जांगल प्रदेश में **राठौड़ वंश की स्थापना** की।
- करणी माता के आशीर्वाद से राव बीका ने **1488** में **नेरा जाट** के साथ मिलकर **बीकानेर नगर** बसाया व बीकानेर को राजधानी बनाया।
- बीकानेर की स्थापना **अक्षय तृतीया** के दिन हुई थी। इस दिन बीकानेर में **पतंग महोत्सव** मनाया जाता है।
- राव बीका ने **देशनोक** में करणी माता का मंदिर बनवाया।
- राव बीका ने जोधपुर के शासक **राव सूजा** पर आक्रमण किया व राजकीय चिह्न छीनकर बीकानेर लाये।

राव लूणकरण (1505-1526 ई.)

- **विदू सूजा** के ग्रंथ '**राव जैतसी रो छंद**' में इन्हें **कलियुग का कर्ण** कहा गया है।
- **कर्मचन्द्र वंशकीर्ति काव्यम्** ग्रंथ (रचयिता - **जयसोम**) में इनकी तुलना कर्ण से की है।
- **लूणकरणसर** शहर व झील का निर्माण करवाया।
- राव लूणकरण ने नागौर के शासक **मुहम्मद खाँ** को हराया।
- **1526** में **ढोसी के युद्ध** में **नारनौल** के नवाब **अबीमीरा** से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राव जैतसी (1526-1541 ई.)

- **खानवा युद्ध** में अपने बेटे **कल्याणमल** को भेजा था।

- **विदू सूजा** राव जैतसी का दरबारी कवि था।
- बाबर के पुत्र **कामरान** ने 1534 ई. में **भटनेर दुर्ग** पर अधिकार कर लिया था। तब राव जैतसी ने दुबारा आक्रमण करके भटनेर को जीत लिया। इस युद्ध का वर्णन विदू सूजा के ग्रंथ '**राव जैतसी रो छंद**' में मिलता है।
- **पाहेबा / साहेबा (बीकानेर)** के युद्ध में राव मालदेव के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

राव कल्याणमल (1541-1574 ई.)

- अपने पिता जैतसी की मृत्यु के बाद कल्याणमल **शेरशाह सूरी** के दरबार में चला गया।
- **गिरी सुमेल युद्ध** में शेरशाह सूरी की सहायता की, इसलिए शेरशाह सूरी ने बीकानेर का शासक बना दिया।
- **नागौर दरबार (1570 ई.)** में उपस्थित होकर **अकबर** की अधीनता स्वीकार की। अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर दिया तथा अपने दोनों पुत्रों **पृथ्वीराज राठौड़** व **रायसिंह** को अकबर के दरबार में भेज दिया।
- बीकानेर का प्रथम शासक जिसने **मुगलों की अधीनता स्वीकार** की।

महाराजा रायसिंह (1574-1612 ई.)

- **अकबर + जहाँगीर** की सेवा की।
- 1570 में नागौर दरबार में सम्मिलित होकर अकबर की सेवा में चले गये। अकबर ने **4000** का मनसब दिया।
- 1572 में अकबर ने रायसिंह को **जोधपुर दुर्ग** सौंप दिया।
- 1574 में **महाराजाधिराज** की उपाधि के साथ बीकानेर के शासक बने।
- 1574 ई. में **चंद्रसेन** के दमन हेतु मुगल सेना के साथ गये।
- 1593 ई. में **बुरहानुल्मुल्क** के विरुद्ध **दानियाल के युद्ध अभियान** में गये। इसके अलावा रायसिंह ने **काबुल, कंधार, बलूचिस्तान** में सैन्य अभियान किये।
- अकबर ने 1604 ई. में **शाहनाबाद-नूरपुर** की जागीर तथा **राय** की उपाधि दी। इनकी सेवाओं से खुश होकर **जूनागढ़** का प्रदेश भी दिया।
- महाराजा रायसिंह राजपूताना में जहाँगीर के विध्वंसनीय व्यक्ति थे। जहाँगीर ने **5000** का मनसबदार बनाया।
- अपने मंत्री **कर्मचन्द्र** की देखरेख में **जूनागढ़ दुर्ग** का निर्माण (1589-1594 ई.) करवाया तथा किले के **सूरजपोल द्वार** पर **जगत से रायसिंह प्रशस्ति** लिखवाई।

- रायसिंह के समय अकाल पड़ा, तब इन्होंने जगह-जगह व्यक्तियों के लिए सदाब्रत खोले और पशुओं के लिए चारे-पानी की व्यवस्था की।
- मुंशी देवीप्रसाद ने इन्हें राजपूताना का कर्ण कहा।
- कर्मचन्द्र वंशकीर्ति काव्यम् (रचयिता - जयसोम) में रायसिंह को राजेन्द्र कहा गया है।

पुस्तकें

- रायसिंह महोत्सव (संस्कृत भाषा में, जिसमें राव सीहा से रायसिंह तक का इतिहास है)
- वैद्यक वंशावली
- बाल बोधिनी
- ज्योतिष रत्नमाला / रत्नाकर
- 1612 ई. में बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) में मृत्यु हो गई।

दलपत सिंह

- महाराजा रायसिंह के बड़े पुत्र दलपत सिंह ने जहाँगीर का विरोध किया, तो जहाँगीर ने इनको भटनेर किले में कैद कर दिया, वहीं इनकी मृत्यु हो गई।

महाराजा सूरसिंह

- बीकानेर में सूरसागर झील तथा सूरमहल का निर्माण करवाया।

महाराजा कर्णसिंह (1631-1669 ई.)

- शाहजहाँ + औरंगजेब की सेवा की।
- चिंतामणि भट्ट के ग्रंथ 'शुक सप्तति' में जांगलधर बादशाह कहा गया है।
- इन्होंने साहित्य कल्पद्रुम की रचना की।
- इनके दरबारी विद्वान गंगानंद मैथिली ने कर्णभूषण व काव्य डाकिनी ग्रंथों की रचना की।

महाराजा अनूपसिंह (1669-1698 ई.)

- दक्षिण अभियान में मराठों के विरुद्ध जीत के बाद औरंगजेब ने माही मरातिब व महाराजा की उपाधि दी।
- जूनागढ़ दुर्ग में 33 करोड़ देवी-देवताओं के मंदिर का निर्माण कराया। ये मूर्तियाँ दक्षिण भारत से लाई गई थीं।

- उत्तरकला, मध्यकालीन कला का विकास इनके समय हुआ।
- इनके काल को बीकानेर चित्रशैली का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- इनके दरबारी कवि भावभट्ट थे, जो अपने ग्रंथों को इन्हीं के नाम पर लिखते थे।

भावभट्ट के ग्रंथ

- अनूप संगीत विलास
- अनूप संगीत रत्नाकर
- संगीत अनुपांकुश
- भाव मंजरी
- चुंचेर (अनूपगढ़) की स्थापना की तथा जूनागढ़ दुर्ग में अनूप महल व अनूप संस्कृत पुस्तकालय का निर्माण करवाया।

रचनाएँ

- अनूप विवेक
- काम प्रबोध
- श्राद्ध प्रयोग
- चिंतामणि
- अनूपोदय

सूरतसिंह

- 1805 ई. में मंगलवार के दिन भटनेर दुर्ग पर आक्रमण करके भटनेर को जीतकर नाम हनुमानगढ़ कर देते हैं।
- 1814 ई. में चूरु पर आक्रमण किया। तब चूरु के ठाकुर शिवजी सिंह ने बीकानेर की सेना पर चाँदी के गोले चलवाये थे।
- 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी से संधि कर ली।

रतनसिंह

- दयालदास दरबारी कवि था, जिसने दयालदास री ख्यात / बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात की रचना की, जो राजस्थान की अंतिम ख्यात थी।
- सीकर क्रांतिकारी जवाहर जी को शरण दी थी।

बीकानेर शासक सरदार सिंह के समय 1857 की क्रांति हुई एवं महाराजा डूंगरसिंह के समय बीकानेरी भुजिया का चलन हुआ।

महाराजा गंगासिंह (1887-1943 ई.)

- 1901 ई. में चीन में बॉक्सर विद्रोह को दबाने के लिए अपनी ऊँटों की सेना गंगा रिसाला (कैमल कोर) लेकर गये। तब अंग्रेजों ने इन्हें चीन युद्ध मेडल दिया।
- छप्पनिया अकाल (1899 ई., विक्रम संवत् 1956) में महाराजा गंगासिंह ने जनता के लिए अकाल राहत कार्य चलाया। तब अंग्रेजों ने इन्हें कैसर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- 1913 में महाराजा गंगासिंह ने प्रजा प्रतिनिधि सभा की स्थापना की, जो राजस्थान में विधानमंडल की दिशा में उठाया गया पहला कदम था।
- बनारस हिन्दू कॉलेज को महामना मदन मोहन मालवीय जी ने 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनाना चाहा, तब बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने सर्वाधिक आर्थिक सहायता की।
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद हुए वर्साय (फ्रांस) के शांति सम्मेलन में भाग लिया।

नरेंद्र मंडल / चैंबर ऑफ प्रिंसेज - 1921

- ब्रिटेन के राजा सम्राट जॉर्ज (पंचम) के शाही फरमान से 1919 में इसका गठन हुआ था।
- 1921 में शुरू हुआ, जो भारत के राजाओं का संगठन था।
- अलवर के राजा जयसिंह ने इसका नाम नरेंद्र मंडल रखा।
- प्रथम चांसलर / अध्यक्ष - महाराजा गंगासिंह (1921-1925)।
- स्वशासन की मांग के लिए गंगासिंह ने रोम में अंग्रेजों को एक पत्र लिखा, जो रोम नोट के नाम से प्रसिद्ध है।
- 1927 में गंग नहर लाये तथा रामनगर का नाम गंगानगर किया।
- गंगासिंह को आधुनिक भारत का भागीरथ कहा जाता है।
- तीनों गोलमेज सम्मेलन (लंदन) 1930, 1931, 1932 में भाग लिया।

निर्माण

- अपने पिता लालसिंह की स्मृति में लालगढ़ पैलेस बनवाया, जिसके वास्तुकार स्टीवेन जैकब थे।
- देशनोक में करणी माता मंदिर का आधुनिक स्वरूप दिया।
- रामदेवरा मंदिर का निर्माण करवाया।

- गोगामेड़ी मंदिर (हनुमानगढ़) का आधुनिक स्वरूप दिया।

महाराजा सादुल सिंह

- बीकानेर के अंतिम शासक।

